अध्याय - 5

उपसंहार

अध्याय - 5

उपसंहार

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन महत्वपूर्ण होता है। महान कवियों का जीवन और साहित्य भी महान होता हैं। निरालाजी का जीवन और साहित्य भी महान है। जो सारे संसार को प्रकाशपूर्ण बनाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा हैं।

निरालाजी का जीवन हमेशा दु:खमय ही रहा हैं। बचपन में ही माता की मृत्यु से आप पर बडा आघात हुआ था। निरालाजी ने हमेशा जीवन में दु:ख पर विजय पाने के लिए प्रयत्न किये हैं। निरालाजी के जीवन पर माता, आपकी पत्नी, पुत्री और परिजनों की मृत्यु की तीव्र प्रतिक्रिया हुई, परिणामत: आपके जीवन और साहित्य में क्रोध और व्यंग्य के स्वर तीव्र हो गये। निरालाजी के जीवन में बैसवाडे भूमि का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। बैसवाडे के संस्कार निरालाजी के प्रत्येक कार्य में दिखाई देते हैं, जिससे निरालाजी का जीवन और साहित्य महान हो गया।

निरालाजी जीवनभर परोपकारी ही रहे हैं। निरालाजी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी फिर भी आपने अपने भतीजों की परवरिश की। निरालाजी के आत्मसम्मान को लोग अहंकार समझते रहे। निरालाजी के जीवन में निर्भयता की भावना सर्वत्र पाई जाती हैं। निरालाजी के जीवनपर तुलसी, कबीर,, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ ठाकुरजी आदि व्यक्तियों का प्रमुख रूप से प्रभाव देखा जा सकता हैं। निरालाजी का "समन्वय" के सम्पादन काल से ही स्वामी विवेकानन्द के विचारधारा से गहन परिचय हुआ। निरालाजी ने अपने जीवन पर स्वामी विवेकानंद का प्रभाव अधिक स्वीकार किया है।

निरालाजी जीवन में अनेक कटु संघर्षो का विष पान कर गये हैं। निरालाजी के जीवन के अंतिम दिन अति दुःख से गुजर गये हैं। संपूर्ण जीवन के दुःख को समेट कर रखने वला निरालाजी का शरीर आखिर मृत्यु की गोद में जा बैठा। निरालाजी का व्यक्तित्व एवं जीवन की असाधारणता ही आपके साहित्य की असाधारणा बन जाती है। निरालाजी स्वाभिमानी व्यक्ति थे। निरालाजी का स्वाभिमान देश, जाति, संस्कृति और साहित्य का स्वाभिमान था।

आधुनिक हिंदी कविता के "आदि गुरू"[1] निरालाजी में कवि और आलोचक दोनों का आदर्श समन्वय है। निरालाजी की अनेक कविताओं में प्रेम, सौंदर्य चेतना, प्रकृति चित्रण, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक चेतना, विद्रोह, भक्ति भावना, दर्शन और मानवतावाद आदि का वर्णन मिलता है। निरालाजी काव्य में कल्पना और सौदर्य दृष्टि को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। निरालाजी का कोमल और कठोर, निष्ठावान और विद्रोही व्यक्तित्व आपकी कृतियों में दिखाई देता है।

निरालाजी का नाम गद्य साहित्य में आदर के साथ लिया जाता है। निरालाजी ने जहाँ एक ओर कल्पना एवं भावना को काव्य में प्रमुखता दी, वहाँ दूसरी ओर यथार्थता एवं विचारों को गद्य में महत्ता प्रदान की। निरालाजी की कहानियों में प्रेम विवाह, यथार्थवादी दृष्टि, सुधारणावादी स्वर, अध्यात्मिकता आदि बातों का वर्णन मिलता है।

निरालाजी ने उपन्यास विधा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। निरालाजी का उपन्यास साहित्य में स्थान प्रेमचंद्रजी के समरूप देखा जाता है। निरालाजी ने रोमाण्टिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और यथार्थावादी उपन्यास लिखे हैं। निरालाजी ने उपन्यास साहित्य में सामाजिक बातों पर कडा व्यंग्य कर उनमें क्रांति लाने का महत्वपूर्ण प्रयत्न किया है।

निरालाजी ने राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, भाषा-संबंधी, दार्शनिक, आलेचनात्मक आदि विभिन्न विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। निरालाजी के निबंधों में अध्ययन

की सूक्ष्मता, अन्तर्दृष्टि एवं साहित्यिक समझ की श्रेष्ठता अंकित है। निरालाजी की तर्क भूमि सभी निबंधों में एक सी नहीं है। निरालाजी ने अनेक निबंधों में तुलसीदास के ज्ञान पक्ष का समर्थन किया है। निरालाजी के निबंधों में चिंतनशीलता, जागरूकता, विविधता आदि बातों का अध्ययन होता है।

निरालाजी की लिखी हुई आलोचना काव्य के किसी-न-किसी पक्ष को उजागर करती है। निरालाजी आलोचना करते समय कवि मन के गुप्त रहस्य प्रकट करते हैं। निरालाजी के गद्य का अपना एक निश्चित महत्व है। निरालाजी के काव्य को समझने के लिए गद्य साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। निरालाजी को एक श्रेष्ठ गद्यकार के रूप में उनका गद्य साहित्य लोगों के सामने लाता है। इसलिए जितनी महत्वपूर्ण निरालाजी की कविताएँ है, उतना ही महत्वपूर्ण आपका गद्य और कथा साहित्य माना गया है।

निरालाजी ने साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से अपने को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। विद्रोह निरालाजी के साहित्य एवं जीवन की मूल वृत्ति है। इसी विद्रोह को हम निरालाजी के गद्य साहित्य और पद्य साहित्य में देखते हैं। निरालाजी ने गद्य साहित्य में यथार्थवाद, व्यंग्य और हास्य, सुधारवादी प्रयोग आदि बातों पर अधिक बल दिया है। निरालाजी का भाषा पर अधिकार दिखाई देता है। पद्य की तरह गद्य में भी निरालाजी ने अनेक शैलियों का प्रयोग किया हैं, पद्य में जैसे आपने अनेक काव्य रूप रचे हैं, वैसे ही गद्य में। पद्य में बहुत जगह आपका शब्द चयन तत्सम बहुल हैं, वैसे ही गद्य में, जैसे पद्य में सरल शब्दावली के रहते भी दुरूहता उत्पन्न होती है, वैसे ही गद्य में।[2]

निरालाजी साहित्य को अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। निरालाजी साहित्य की स्वतंत्रता, साहित्य की चिर नवीनता के समर्थक हैं। अपने युग में साहित्य की स्वतंत्रता के लिए निरालाजी प्रबल समर्थक रहे हैं और इसी कारण राजनीतिक नेताओं से आपको विरोध भी करना पडा है। निरालाजी जैसा साहित्यकार हर भाषा हर देश में पैदा नहीं होता।[3] निरालाजी के व्यक्तित्व और साहित्य के बारे में

पंडित नन्ददुलारे वाजपेयी ने कहा हैं, जितना प्रसन्न अथवा अस्खलित व्यक्तित्व निरालाजी का हैं, उतना न प्रसादजी का हैं, न पंतजी का हैं। यह निरालाजी की समुन्नत काव्य साधना का प्रमाण हैं।

निरालाजी की सन 1950 तक लिखी हुई प्रकाशित-अप्रकाशित कविताओं का एक संचय तैयार किया जिसका नाम रखा "अपरा"। निरालाजी अपने उत्तर काव्य को "परा" के रूप में संचयित रखना चाहते थे। "अपरा" में "परा" भी कम नहीं हैं, वस्तुतः "अपरा" की आधारशीला "परा" ही है यह निरालाजी जानते थे। यह निर्णित सत्य है कि यह "अपरा" अपराजियता है और आधुनिक काल के नवजागरण की सोलहो कलाएँ उसके आत्मतत्व में संपुटित हैं।[4] निरालाजी के काव्य की लगभग सभी प्रवृत्तियाँ इस संग्रह में दिखाई देती हैं।

निरालाजी की विचारधारा और भावभूमि का विकास राष्ट्रीय और सांस्कृतिक भूमिका पर हुआ हैं। निरालाजी की राष्ट्रीय कविताओं का स्वर भी सांस्कृतिक ही हैं। निरालाजी ने "अपरा" संग्रह की शुरूवात ही "भारती वन्दना" से की हैं; जिससे देश महत्ता समझ में आये और भारतीय संस्कृति के दर्शन हो।

निरालाजी की समस्त राष्ट्रीय चेतना जातीय जीवन, जातीय संस्कृति एवं जातीय उत्थान से संबंधित हैं। निरालाजी का कृतित्व ही राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत नहीं है, वरन आपका व्यक्तित्व भी राष्ट्रीयता से गुँथा हुआ हैं। नरेंद्र भानावतजी को लगता हैं कि निरालाजी का व्यक्तित्व राष्ट्रीयता का जितना प्रभाव और प्रतिनिधित्व प्रकट करता हैं उतना शायद ही किसी वर्तमान कवि का।[5]

निरालाजी की राष्ट्रीयता के पीछे आपका अध्यात्मिक चिन्तन एवं विवेकानन्द आदि संतों के विचारों का प्रभाव दिखाई देता हैं। भारत देश के प्रति निरालाजी के हृदय में अपार आदर वास करता है। इस पुस्तक में निरालाजी की राष्ट्रीय चेतना की अनेक कविताएँ हैं। "भारती वन्दना", "जागो फिर एक बार", "छत्रपति शिवाजी का पत्र" आदि कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से महत्वपूर्ण हैं।

निरालाजी ने भारत का वर्णन प्रथम कविता में किया हैं जिससे निरालाजी की देश भक्ति के दर्शन होते हैं। निरालाजी की कविताओं में भारत माता का प्रेम प्रकृति वर्णन के द्वारा चित्रित किया गया हैं जिससे निरालाजी का भारत माता के राष्ट्रभक्त होने का प्रमाण मिलता हैं। निरालाजी की राष्ट्रीय चेतना बचपन से ही आपके जीवन में दिखाई देती हैं। निरालाजी के बचपन से राष्ट्रीय चेतना होने के कारण आपने कवि जगत में भारत माता का वर्णन प्राचीन काल के माध्यम से भी चित्रित किया है। निरालाजी भारत माता के लिए अपने जीवन का बलिदान भी देना चाहते हैं जिससे निरालाजी की राष्ट्रीय चेतना दिखाई देती हैं। निरालाजी ने भारतीय लोगों के मन में राष्ट्रीय चेतना निर्माण करने के लिए अपनी अनेक कविताओं द्वारा भारत देश के गौरव का चित्रण किया है। लगता है भारतवासियों के मन में राष्ट्रीय चेतना निर्माण करने का निरालाजी जो उद्देश्य था वह निरालाजी के देहावसान के बाद सिध्द हुआ है। निरालाजी की राष्ट्रीय कविताओं में हमें देश का सुख, स्वाधीनता एवं समृध्दि का स्वर सुनाई देता है।

निरालाजी ने भारत के अतीत का गौरवशाली वर्णन किया है, जिससे निरालाजी की राष्ट्रीय चेतना अतीत में प्रतिबिंबित दिखायी देती हैं। निरालाजी ने भारत के निर्माण में अतीत के वैभव को महत्वपूर्ण माना हैं। अतीत काल के द्वारा ही वर्तमान और भविष्यकाल पर नजर डाली जाती हैं। इसलिए निरालाजी ने अतीत का महत्व प्राप्त कर भारतवासियों के मन में अतीत का प्रेम निर्माण कर वर्तमान भारत के प्रति राष्ट्रीय चेतना निर्माण करने का प्रयत्न किया हैं।

निरालाजी का अतीत का वर्णन, आपके बचपन और यौवन के दिनों में पडे प्रभाव स्वामी विवेकानन्द के विचारों के कारण दिखाई देता है। प्रत्येक व्यक्ति को अतीत का ज्ञान लेकर ही आगे जाना पडता है उसी तरह निरालाजी ने भी भारत के अतीत का गौरवगान कर वर्तमान भारत का चित्र हमारे सामने रखा हैं। निरालाजी ने अतीत के वर्णन में महाराजा शिवाजी, गुरू गोविंद सिंह, बुध्द, महावीर, शंकर, रामानुज आदि महापुरूषों का वर्णन कर वर्तमान भारतीय लोगों को इनके

कार्य के बारे में परिचित कराया है। यह निरालाजी का एक राष्ट्रीय कार्य ही माना जायेगा जिससे भारत देश का नाम पूरे गौरव के साथ लिया जा सके।

जब से अँग्रेजों का शासन भारत पर शुरू हुआ तभी से भारतीय लोगों के मन से राष्ट्र प्रेम की भावना कम होती दिखाई देती है। परंतु अनेक कवियों ने अपनी कलम के व्यंग्य से भारतीय समाज को जगाने का प्रयत्न किया है। निरालाजी वर्तमान भारतीय जनता के व्यवहार से नाराज है। निरालाजी मानते हैं कि, आज का मानव सिर्फ अपने सुख का विचार करता है, जिससे देश की प्रगति नहीं हो सकती। आज मानव के सामने सिर्फ पैसा कमाना एक मात्र उद्देश्य है। इसीलिए निरालाजी वर्तमान देश पर कडा व्यंग्य करते हुए दिखाई देते हैं।

निरालाजी देश की आर्थिक स्थिति पर भी अपने विचार लोगों के सामने रखते हैं। देश की आर्थिक स्थिति का महत्वपूर्ण आधार कृषक समाज है और जब तक इस समाज की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होगी तब तक देश का आर्थिक विकास नहीं होगा। निरालाजी मानते हैं कि समाज में दलित और कृषक समाज में आर्थिक क्रांति होनी चाहिए तभी पूँजीपति और धनिक लोग अपना अधिकार इन लोगों के हाथ में दे सकेंगे। निरालाजी ने अपनी अनेक कविताओं में भारत की आर्थिक दशा का वर्णन किया है, जो प्रभावकारी रहा है। समाज में आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण भिक्षुक और विधवा नारी की दशा हमारे समाज में जानवरों से भी बदतर होती है। भारत देश की वर्तमान आर्थिक दुर्दशा का चित्र हमें "भिक्षुक" और "दान" कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पूँजीपति और धनिक लोगों ने भारतदेश को खोकला बनाकर छोडा है जो आनेवाली पीढी के लिए बुरी बात हो सकती है।

निरालाजी के जीवन में नारी के बदले हमेशा आदर के भाव व्यक्त हुए दिखाई देते हैं। निरालाजी के बचपन काल से ही स्त्री जाति का महत्व प्राप्त हो गया था। माता हीन बालक निरालाजी ने अपने यौवन काल में भी पत्नी का सुख ज्यादा नहीं पाया। इसलिए निरालाजी के मन में हमेशा स्त्री के प्रति आदर के भाव मिलते हैं। निरालाजी ने कभी भी स्त्री का वासनिक चित्र अपनी कविता में

नहीं किया है। नारी के समान अधिकारों का संघर्ष राष्ट्रीय चेतना का अभिन्न अंग माना जाता है। निरालाजी स्त्री की स्वतंत्रता के समर्थक माने जाते हैं। स्त्री की दीनता, निराशा और असहायता का चित्रण करते हुए भी निरालाजी ने स्त्री को प्रेरणा और शक्ति स्त्रोत के रूप में देखा है। "तोडती पत्थर" और "विधवा" कविता में निरालाजी ने स्त्रीपर होनेवाले अन्यायों का वर्णन किया है। निरालाजी स्वभावतः साहित्य में स्त्रियों के योगदान के प्रति बडे सजग थे।

निरालाजी ने भारतीय सामाजिक जीवन का भी वर्णन किया है। निरालाजी ने समाज के मध्यमवर्गीय व्यक्ति, समाज के कान्यकुब्ज कुल आदि लोगों पर अपनी तीखी लेखनी से कडा व्यंग्य किया। समाज में मध्यम वर्गीय लोग भी अपनी हैसियत के बाहर सोच विचार करते हैं और दुःख का सामना करते हैं। समाज में इन लोगों का महत्व कुछ समय के लिए बढ जाता है परंतु लोगों को मालूम हो जाता है कि यह सब नाटकबाजी है तो लोग उन्हें फटकारते हैं। समाज में कुछ परिवार बडे महत्वपूर्ण होते हैं परंतु कवि मानते हैं कि समाज में होने वाले बडे कुछ {परिवार} सब झूठ लोगों होते हैं उन्हें सिर्फ पैसा प्यारा होता है। इसलिए निरालाजी ने अपनी एकमात्र पुत्री का विवाह कान्य कुब्ज ब्राहमण कुल में नहीं किया।

निरालाजी ने अपनी कविताओं में समाज के शोषित वर्ग का वर्णन किया है। निरालाजी मानते हैं कि, हमारे समाज में कृषक वर्ग का ही अधिक शोषण होता है। जो व्यक्ति देश के लिए महत्वूपर्ण है उसी का शोषण हमारे देश में होता है जो बुरी बात है। समाज में स्त्री और भिक्षुक वर्ग का भी शोषण होता है। स्त्री जो समाज का एक महत्वपूर्ण अंग हैं उसका भी शोषण होता है। निरालाजी ने "तोडती पत्थर" और "विधवा" कविता में स्त्री के शोषण के चित्र समाज के सामने रखे हैं। भिक्षुक वर्ग का तो शोषण हमारे समाज में हमेशा से चलता आ रहा है और आज भी चल रहा है। "दान" और "भिक्षुक" कविताओं में भारतीय भिक्षुक के शोषण का वर्णन है।

निरालाजी ने समाज में क्रांति लाने का भी प्रयत्न किया हैं। निरालाजी मानते हैं कि जब तक दलित एवं शोषित व्यक्ति उठ खडे नहीं होंगे तो समाज में समानता पैदा नहीं हो सकेगी। अगर समाज में क्रांति लानी है तो सबसे पहले भारतीय समाज से दलित और दुःखी लोगों को खडा होना चाहिए। निरालाजी ने धारा, बादल, शिव और काली को भारतीय समाज में क्रांति लाने के लिए प्रार्थना की है। जिससे निरालाजी यह चाहते हैं कि समाज में समानता निर्माण हो और भारत देश सुखी और समृध्द हो। निरालाजी ने भारत को स्वतंत्र करने के लिए क्रांति करने के लिए कहा है और जब तक देश की शक्तियों के एकीकरण, स्वार्थ का त्याग, राष्ट्रीय हिंत-चिंत एवं साम्राज्यवादियों के अंत द्वारा ही देश की स्वतंत्रता संभव है। निरालाजी की क्रांति का दर्शन कल्पनापर आधारित न होकर युग की आवश्यकता का पर्याय है।

निरालाजी की राजनीतिक स्वतंत्रता का लक्ष्य जन जीवन की स्वतंत्रता है, मानसिक दासत्व से छुटकारा है, भेदभाव का अन्त है। निरालाजी के लिए राजनीतिक चेतना सामाजिक क्रांति का ही पर्याय है।

निरालाजी ने स्वाधीन भारत के निवासियों को सुखी रहने का संदेश दिया है। निरालाजी ने देवी सरस्वती और धनिक वर्ग से कहा हैं कि भारत के निवासियों को ज्ञान और धन दो जिससे वह सुखी हो जाय और भारत के निवासियों का दुःख दूर हो जाय। जो एक महान राजनीतिक नेता का कार्य होता है वही कार्य निरालाजी कविताओं द्वारा करते रहे हैं।

निरालाजी का काव्य केवल भावुक राष्ट्रीय भावों की जागृति का ही काव्य नहीं है। पराधीनता, मुक्ति के साथ सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने की भावना भी हैं। राष्ट्रीय एकता के लिए भाषा की एकता का होना अनिवार्य नहीं तो आवश्यक शर्त है। हिंदी के प्रति अत्याधिक प्रेम भी निरालाजी की पूर्ण राष्ट्रीय मनोवृत्ति का निदर्शक है। निरालाजी ने हिंदी के लिए बडे-बडे राजनीतिक लोगों से वादविवाद भी किया है जो एक सच्चे भारतीय के लक्षण माने जाते हैं।

निरालाजी का काव्य राष्ट्रीय जागरण की वह प्रभाती है, जिसमें आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा मानसिक सभी तरह की स्वीधनता का स्वर संधान पाया जाता है। गंगा प्रसाद पाण्डेयजी ने ठीक ही कहा है, आपकी राष्ट्रीयता भी अन्य भावनाओं के अनुसार एक विराट-भाव-रूप समाष्टि में प्रतिष्ठापित है जिससे देश विशेष की भौगोलिक सीमा के वर्णन से अधिक उसके सुख-स्वास्थ की आकांक्षा ही उभर कर सामने आती है।[6]

निरालाजी की राष्ट्रीयता की एक और विशेषता यह है कि वह भावावेश का परिणाम नहीं है। निरालाजी की कविता में राष्ट्रीय भावना और विश्वकल्याण की भावना में किसी प्रकार का विरोध नहीं है। गंगा प्रसाद पाण्डेयजी कहते हैं, राष्ट्र को अपने साहित्य और जीवन के द्वारा उन्नति तथा अभुदय के पथ पर अग्रसर करने वाले निरालाजी जैसे महाकवि का वन्दन-पूजन करना हमारा पवित्र कार्य और कर्तव्य है।[7]

निरालाजी का काव्य हमारी सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है। निरालाजी अद्वैतवादी वेदांती संस्कृति के कवि हैं। निरालाजी का काव्य विवेकानंदजी के नव्य वेदान्त से प्रेरणा ग्रहण करता है। आपके संपूर्ण काव्य का स्वर वही है जो स्वामी विवेकानन्द साहित्य का स्वर है .... एक प्रकार से आपको नव्यवेदान्ती संस्कृति के कवि कहा जा सकता है।[8] निरालाजी युग संस्कृति के साथ भारत के श्रेष्ठतम् सांस्कृतिक युगों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

निरालाजी के काव्य में रहन-सहन की भौतिक आवश्यकताओं को साध्य न मानकर मानव जीवन के उत्कर्षक साधनों के रूप में ही स्वीकृत किया गया है। निरालाजी मानते हैं कि, समाज में मानव सिर्फ अपने भौतिक सुखों का ही विचार करता है उसी विचार में वह अपनी सभ्यता और संस्कृति को खो देता है जो भारत जैसे सांस्कृतिक देश के लिए अच्छी बात नहीं हो सकती। निरालाजी मानते हैं कि मानव को हमेशा अपनी भौतिक आवश्यकताओं के साथ-साथ अपनी संस्कृति और सभ्यता का जतन करना चाहिए।

निरालाजी ने भारतीय भोजन व्यवस्था में शाकाहार भोजन का वर्णन ज्यादा किया हैं। जिससे निरालाजी भारतीय लोगों को यह संदेश देना चाहते हैं कि, प्राणी मात्रा पर आप प्रेम और दया करो और अहिंसा के मार्ग पर चलने का प्रयत्न करो। निरालाजी ने भारत माता के शरीर पर प्रकृति ने अनेक प्रकार के वस्त्र धारण किये हैं ऐसा वर्णन अनेक बार किया हैं जो महत्वपूर्ण माना जा सकता हैं। निरालाजी मानते हैं, वस्त्र मानव के शरीर रक्षा के लिए होते हैं, उसका प्रदर्शन करने के लिए नहीं। भारत देश में कई लोगों को रहने के लिए आवास नहीं हैं, परंतु कई लोगों के पास कितनी हवली और महल होते हैं, इसका वर्णन निरालाजी "तोडती पत्थर" कविता में करते हैं।

भारत की प्राचीन संस्कृति उदात्त जीवन का संदेश देती है। भारत की संस्कृति प्राचीन होने से निरालाजी हमेशा भारतीय संस्कृति के आगे नतमस्तक रहे हैं। निरालाजी ने अपनी अनेक कविताओं में भारत की प्राचीन संस्कृति को लोगों के सामने रखने का प्रयास किया है। निरालाजी मानते हैं कि, मानव को प्राचीन काल की संस्कृति को ही आत्मसात कर वर्तमान और भविष्य की संस्कृति के लिए उसका उपयोग करना चाहिए। जिस देश की संस्कृति प्राचीन होती है, वही देश अन्य देशों से महान कहलाता है। निरालाजी ने भी अन्य देशों के मुकाबले भारत देश की अतीत संस्कृति का महत्व बताने का प्रयत्न "यमुना के प्रति", "खण्डहर के प्रति" आदि कविताओंकेमाध्यम से किया हैं, जो एक महान कवि का कार्य माना जा सकता है।

विज्ञान के ज्ञान बोध ने आज की संस्कृति को जड एवं जीवनशून्य कर दिया है जो निरालाजी को बुरा लगता हैं। निरालाजी कहते हैं, आज का मानव सिर्फ पैसा कमाना चाहता है और विज्ञान के साधनों का उपभोग लेना चाहता है। निरालाजी वर्तमान देश के मानव को सुख के पीछे भागते हुए देखकर दुःखी होते हैं। वर्तमान भारतीय संस्कृति जो पश्चिमी संस्कृति की ओर आकृष्ट हो रही है इस पर निरालाजी व्यंग्य कर कहते हैं कि, भारत की संस्कृति की महत्वपूर्ण देन "भगवत्

गीता" से ही पश्चिमी संस्कृति प्रभावित है जो भारतीय लोगों को मालूम नहीं है। निरालाजी मानते हैं कि संस्कृति का -ह्रास जन-जीवन की गरिमा को नष्ट कर देता है, इसलिए वर्तमान संस्कृति को महत्व देना चाहिए। निरालाजी वर्तमान संस्कृति के प्रति निराश होकर भी "देवी सरस्वती" कविता में भारत की संस्कृति को बनाये रखने की प्रार्थना करते हैं।

निरालाजी मानते हैं व्यक्ति से ही भारतीय संस्कृति का जतन होगा। व्यक्ति से ही समाज बनता है। लेकिन निरालाजी ने भारत देश में व्यक्ति का कितना अपमान होता है इसका उदाहरण "भिक्षुक" और "दान" कविता में दिया है। समाज में व्यक्ति के लिए स्थान नहीं हैं परंतु प्राणियों के लिए स्थान है, इससे यह समझ में आता हैं कि समाज में व्यक्ति का स्थान कितना नीचा है। निरालाजी कहते हैं कि, मानव के व्यक्तिगत स्वार्थ ने ही हमारे भारतीय लोगों के ऊपर मुसलमान और अंग्रेज लोगों का राज्य आया था। निरालाजी भारतीय व्यक्ति को संदेश देते हैं कि, व्यक्ति को अपना स्वार्थ छोडकर समाज और देश के लिए जीना चाहिए और अपने बलिदान से समाज और देश को सुखी करने का प्रयास करना चाहिए जो एक भारतीय का कर्तव्य है।

भारत की संस्कृति में सम्मिलित परिवार की पध्दति महत्वपूर्ण है। एक परिवार अनेक सीमाओं में बंधा रहता है। निरालाजी पारिवारिक जीवन समाज में महत्वपूर्ण मानते हैं। निरालाजी ने भारतीय सामाजिक जीवन का भी वर्णन किया है। संस्कृति का अस्तित्व समाज में होता है। निरालाजी मानते हैं कि भारत में वर्णव्यवस्था और जाति व्यवस्था पर ही समाज की रचना हैं। भारत में मुसलमान और अंग्रेज शासन काल आने से ही भारत की वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था में फूट पडी हैं। निरालाजी ने भारतीय वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था पर कडा व्यंग्य किया है।

भारतीय संस्कृति अति प्राचीन होने से बडों का आदर भाव करना हमारा कर्तव्य है इसलिए निरालाजी विवेकानंदजी का वर्णन बडे आदर के साथ करते थे।

निरालाजी ने अपने यौवन काल में अपने पिता, सास-ससुर, हिंदी साहित्य के लेखक आदि लोगों का आदर भाव किया है। निरालाजी की कविताओं में अनेक बार बडों का आदर करने के उदाहरण दिखाई देते हैं जो एक महाकवि के काव्य में दिखाई देते हैं।

निरालाजी का व्यक्तित्व जहाँ एक ओर कवि का संवेदनशील व्यक्तित्व है वहाँ दूसरी ओर संत अथवा आध्यात्म साधक का। निरालाजी का काव्य पूर्ववर्ती अध्यात्मिक काव्य की सारी परंपरा को आत्मसात करता है। निरालाजी की "राम की शक्ति पूजा" और "देवी सरस्वती" आदि कविताओं में आध्यात्मिकता के दर्शन होते हैं।निरालाजी भक्त कवि ही थे। बुध्दि के धरातल पर स्थित तथा भावना से संपृक्त आपका भक्ति काव्य भारतीय भक्ति-काव्य धारा में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

निरालाजी की दार्शनिक विचारधारा केवल विचार क्षेत्र की वस्तु न होकर व्यक्ति कल्पना और समाज मंगल की सृजनात्मक भाव-भूमि है। निरालाजी की दार्शनिकता स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त दर्शन के अनुसार है। मानव को ईश्वर मानते हुए उसकी सेवा तथा उससे प्रेम करने की भावना निरालाजी के दर्शन का प्रमुख स्वर है। "तुम और मैं" निरालाजी की दार्शनिक कविता महत्वपूर्ण है। ब्रह्म से ही जगत की उत्पत्ति है, अंत में जगत उसी में लीन होता है। मानव जीवन के सभी कर्मो का ब्रह्म से ही उत्पन्न होना और ब्रह्म में ही लीन होना निरालाजी मानते थे।

अन्य संतों की तरह निरालाजी ने भी माया की भर्त्सना की है। माया का आवरण हटाने के लिए आत्मा और परमात्मा में परस्पर संबंध रखने चाहिए। निरालाजी का समस्त काव्य मानवता से ओत-प्रोत है। निरालाजी का मानवतावाद किसी राजनीतिक वाद का परिणाम नहीं था। निरालाजी का संपूर्ण जीवन दीन-दु:खी लोगों के सुख के प्रयत्न करने के लिए गया है और आपने दीन-दु:खी लोगों

पर अत्याचार करनेवाले पूंजीपतियों पर कडा व्यंग्य किया है। निरालाजी की मानवता में एक ओर आदर्शवाद का चित्रण होता है, तो दूसरी ओर यथार्थवाद का। संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार की भावना से अनुप्राणित होने के कारण आपके काव्य में संस्कृति के विविध पक्ष अपने सहज और स्वाभाविक रूप में उतरते चले हैं।

संक्षेप में निरालाजी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन अनेक रूपों में हमारे सामने आया है, जो आधुनिक हिंदी कविता में महत्वपूर्ण माना जा सकता है। निरालाजी निश्चय ही राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृति के देशकाल सापेक्ष और निरपेक्ष रूप में समर्थक और संवाहक है। मानव को सुखी, अन्याय के प्रति क्रांति और मानवता की गति का मार्ग प्रशस्त करना ही निरालाजी की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंतव्य है।

संदर्भ :-

1. गोकाककर - कुलकर्णी - निराला : साहित्य मूल्यांकन - पृ. 13
2. डॉ.रामविलास शर्मा - निराला की साहित्य साधना - खंड 2 पृ.496
3. डॉ.बुध्दसेन निहार - विश्व कवि निराला - पृ. 31
4. डॉ.रामरतन भटनागर - निराला नवमूल्यांकन - पृ. 195
5. संपादक - पद्मसिंह कमलेश - निराला - पृ. 49
6. गंगा प्रसाद पाण्डेय - महाप्राण निराला - पृ. 264-65
7. वही - पृ. 344
8. डॉ.रामरतन भटनागर - निराला नवमूल्यांकन - पृ. 225